ओ३म्
वैदिक संस्कृति का उद्घोषक
वैदिक सार्वदेशिक
युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र
शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये
वर्ष 13 अंक 20 कुल पृष्ठ-12 21 से 27 दिसम्बर, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 पौ. शु.-02

ऐतिहासिक विश्व वेद सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न

वेद ही धर्म का मूल और मानव संस्कृति का आधार है
– एम. वेंकैया नायडू

वेद में सभी समस्याओं का समाधान है
– स्वामी अग्निवेश

वेद का सन्देश सारे विश्व को एकसूत्र में बाँध सकता है
– स्वामी आर्यवेश

वेद की शिक्षाओं का प्रचार करके भारतीय संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठापित करें
– आचार्य बालकृष्ण

वेद का प्रकाश घर–घर में फैलाना होगा
– प्रो. विट्ठलराव आर्य

विश्व वेद सम्मेलन से वेद ज्ञान के प्रचार–प्रसार का नया अध्याय शुरू हुआ है
– डॉ. आनन्द कुमार

दिल्ली में ऐतिहासिक 'विश्व वेद सम्मेलन' अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। 15 से 17 दिसम्बर, 2017 तक दिल्ली के इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशाल प्रांगण में 12 महत्त्वपूर्ण सत्रों में चला यह त्रिदिवसीय आयोजन अपने आपमें अनोखा तथा भविष्य की सुन्दर सम्भावनाओं को समाविष्ट किये हुए महत्त्वपूर्ण संदेश देने में पूर्णतया सफल रहा। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की प्रेरणा तथा अध्यक्षता में और पूर्व आई.पी.एस. डॉ. आनन्द कुमार के कुशल संयोजन में आयोजित इस विश्व वेद सम्मेलन का उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति माननीय श्री

एम. वेंकैया नायडू जी ने किया। इस महत्त्वपूर्ण सम्मेलन में वर्तमान की सम–सामयिक समस्याओं, अशिक्षा, अन्याय, महिला उत्पीड़न, आर्थिक असमानता, गरीबी, भुखमरी, पर्यावरण असंतुलन, हिंसा जैसे विषयों को जोरदार तरीके से उठाया गया और इसके निवारण के लिए एक स्वर से उद्घोषित किया गया कि वेद जो सार्वकालिक, सार्वभौमिक, सार्वजनीन और सृष्टि के आदिग्रन्थ हैं उसी के आधार पर उसी की शिक्षाओं को ग्रहण कर उपर्युक्त समस्त समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है।

इस सम्मेलन में देश तथा विदेश के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, संन्यासी, राजनैतिक

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ऐतिहासिक विश्व वेद सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न

चिन्तक व मनीषियों ने पधार कर आयोजन को चार चाँद लगा दिये। इस सम्मेलन की मुख्य विशेषता यह रही कि इसमें समाज के सभी वर्गों के प्रतिष्ठा प्राप्त विद्वान् चाहे वे हिन्दू हों, मुस्लिम हों, सिख हों, ईसाई हों, बहाई हों, बौद्ध हों, जैनी हों सभी ने पधारकर वेदों को महिमा–मंडित करते हुए उसकी शिक्षाओं को विश्व की समस्त समस्याओं का निराकरण करने में समर्थ बताया।

इस विश्व वेद सम्मेलन में मुख्य रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी, अनेकों गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी, सार्वदेशिक सभा के तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री आर.एस. तोमर जी एडवोकेट, सम्मेलन के सहसंयोजक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार पूर्व सचिव संस्कृत एकेडमी, डॉ. वागीश जी, श्री पी. जे. कुरियन उपाध्यक्ष राज्यसभा, स्वामी चिदानन्द जी परमार्थ निकेतन ऋषिकेश, दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई, प्रो. शशिप्रभा कुमार, प्रो. वीरेन्द्र, डॉ. नंदिता शास्त्री, डॉ. पवित्रा वेदालंकार, प्रो. एस.एन. पठान पूर्व कुलपति नागपुर विद्यापीठ, पूर्व केन्द्रीय मंत्री आरिफ मोहम्मद खान, डॉ. ग्लेन टी. मार्टिन (अमेरिका), डॉ. विजय भटकर सुपर कम्प्यूटर के जनक तथा कुलाधिपति नालन्दा विश्वविद्यालय, डॉ. विश्वनाथ कराड़ प्रधान संस्थापक एम.आई.टी. वर्ल्ड पीस विश्वविद्यालय पूणे, पूर्व दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री, डॉ. निष्ठा विद्यालंकार, डॉ. सुदर्शन जगेसर प्रधान मॉरीशस एकेडमी ऑफ साइन्स एण्ड टेक्नालॉजी, प्रो. वाई सुदर्शन राव पूर्व चेयरमैन आई.सी.एच.आर, डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा, श्री राजकुमार कुलपति ओ.पी. जिन्दल ग्लोवल विश्वविद्यालय, डॉ. महावीर मीमांसक, प्रो. कमलेश चौकसी अहमदाबाद विश्वविद्यालय गुजरात, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सोमपाल शास्त्री, स्वामी वेदानन्द दक्षिण अफ्रीका, डॉ. अली मर्चेन्ट बहाई धर्म के विद्वान, मौलाना ए.आर. शाहीन कासमी, डॉ. हनीफ शास्त्री, साध्वी भगवती सरस्वती परमार्थ निकेतन ऋषिकेश, वेदश्री टी.वी.एन. मूर्ति, प्रो. जयदेव वेदालंकार हरिद्वार, आचार्य पुण्डरीक गोस्वामी वैष्णव आचार्य मथुरा, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री प्रधान आर्य पुरोहित सभा दिल्ली व उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, डॉ. रूपकिशोर जी वेद विभागाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, प्रो. पीयूष कान्त दीक्षित कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, प्रो. महावीर अग्रवाल पूर्व कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् व उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, प्रो. श्योताज सिंह महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा, श्री विरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री रामसिंह आर्य उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, स्वामी चन्द्रवेश जी गाजियाबाद, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा एवं संयोजक बहन पूनम आर्या तथा बहन प्रवेश आर्या, श्री विद्यासागर वर्मा पूर्व राजनयिक, आचार्य उदयन गुरुकुल करतारपुर, श्री वेद प्रकाश जी आई.पी.एस., आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र (उड़ीसा), श्री रामानन्द आर्य बिहार, स्वामी संतोषानन्द, श्री पाण्डा जी उड़ीसा, श्री बलवीर आचार्य पूर्व विभागाध्यक्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष, रेखा व्यास डाइरेक्टर दूरदर्शन, आचार्य हनुमत प्रसाद वैदिक विद्वान, श्री रमाकान्त सारस्वत आगरा, श्री रामबहादुर राय अध्यक्ष इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

विश्व वेद सम्मेलन की एक विशेषता यह भी रही कि एक अलग सभागार में देश–विदेश से पधारे वेद के शोधार्थियों द्वारा शोध पत्रों का वाचन भी निरन्तर चलता रहा जिससे श्रोताओं को वेदों की विशेषताओं का विशेष लाभ प्राप्त हुआ। इसका संयोजन डॉ. सुधीर कुमार जे.एन.यू. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने किया। इस अवसर पर अन्तर्जातीय विवाहित जोड़ों का नागरिक सम्मान करके युवाओं को प्रेरित किया गया कि वे गुण–कर्म–स्वभाव को ध्यान में रखकर अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन दें। प्रतिदिन प्रातःकाल विभिन्न गुरुकुलों की ब्रह्मचारिणियों तथा ब्रह्मचारियों ने सस्वर वेदपाठ के द्वारा वैदिक यज्ञ सम्पन्न करके श्रद्धालुओं का मनमोह लिया। यज्ञ के ब्रह्मा पद को पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी की आचार्या नन्दिता शास्त्री ने सुशोभित किया।

विश्व वेद सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी ने सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साम्प्रदायिकता, आर्थिक असमानता, अशिक्षा, जातिवाद, गरीबी एवं भुखमरी, बढ़ता प्रदूषण तथा अनेकों अन्य समस्याओं से पूरा विश्व कराह रहा है। धर्म के आडम्बर में अधर्म फल–फूल रहा है और अधर्म के साये में अन्याय पनप रहा है। स्वामी जी ने कहा कि विश्व में व्यक्तिवाद और उपभोक्तावाद का आज बोलबाला है। सारा धन कुछ व्यक्तियों के हाथ में है और मानवता कराह रही है। उन्होंने कहा कि व्यक्तिवाद और उपभोक्तावाद की चूलें हिलाने वाला मन्त्र भी वेद में उपलब्ध है। **'केवलाघो भवति केवलादी'** अर्थात् अकेला खाने वाला पाप की कमाई खाता है। स्वामी जी ने जातिवाद के विरुद्ध वेद की वर्णाश्रम व्यवस्था का परिचय देते हुए कहा कि वर्णाश्रम व्यवस्था वर्तमान में मौजूद जातिवादी व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत है। आज की शोषण, अन्याय एवं विषमता पर आधारित व्यक्तिवादी विचारधारा को नकारती, ठुकराती, वर्णाश्रम व्यवस्था, न्याय, सहयोग एवं समता पर आधारित समष्टिवादी विचारधारा है। आज के उपभोगवादी, भौतिकवादी, यान्त्रिकी मूल्यों की जगह वेदों में बताई गई वर्णाश्रम व्यवस्था त्याग पूर्वक भोगने सादा जीवन उच्च विचार की संस्कृति को बढ़ावा देती है और बच्चे से लेकर वृद्ध तक प्रतिक्षण प्रत्येक व्यक्ति को उसके जीवन के प्रति आस्था के साथ–साथ आध्यात्मिक मूल्यों को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्थाओं की धुरी पर प्रतिष्ठित करती है और समाज परिवर्तन की प्रेरक शक्ति बनती है।

स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि ईश्वर एक है उसे राम, कृष्ण, गॉड, अल्लाह किसी भी नाम से पुकारो वह सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान एक ही है उसे बांटो मत। हम सब एक परिवार की तरह रहें वेद में वसुधैव कुटुम्बकम की बात कही गई है। स्वामी जी ने कहा कि आज विश्व वेद सम्मेलन के माध्यम से सभी धर्मों के प्रतिष्ठित विद्वान् वेद के संदेश के आधार पर मनुर्भव – इंसान बनने की घोषणा विश्व में करने वाले हैं। उन्होंने कहा कि विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान वेदों में निहित है। अतः सारा विश्व यदि वेदों को अपना ले, उसकी शिक्षाओं को आचरण में ले आये तो सारी समस्याएँ बड़ी आसानी से दूर की जा सकती है। यह विश्व वेद सम्मेलन इसी परोपकारी कार्य का प्रारम्भ है।

इससे पूर्व आर्य कन्या इण्टर कॉलेज टाण्डा, अम्बेडकरनगर, उत्तर प्रदेश की मुस्लिम कन्याओं ने मंगलाचरण किया। तदोपरान्त माननीय उपराष्ट्रपति जी श्री एम. वेंकैया नायडू जी का स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य बालकृष्ण जी, स्वामी चिदानन्द जी, डॉ. ग्लेन टी. मार्टिन जी, स्वामी प्रणवानन्द जी आदि ने पगड़ी पहनाकर तथा शॉल ओढ़ाकर अभिनन्दन किया। उसके बाद उपराष्ट्रपति जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत विश्व वेद सम्मेलन का उद्घाटन किया। दीप प्रज्ज्वलन में स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्य बालकृष्ण जी, स्वामी चिदानन्द जी आदि ने उनका सहयोग किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. आनन्द कुमार जी ने उपराष्ट्रपति जी के सम्मान में अभिनन्दन पत्र का वाचन किया।

विश्व वेद सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए माननीय उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू जी ने कहा कि आज मैं बहुत आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ कि मुझे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा पवित्र कार्यक्रम विश्व वेद सम्मेलन का उद्घाटन करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि वेदों का ज्ञान मनुष्य मात्र के लिए है तथा वेदों में हमारी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता

ऐतिहासिक विश्व वेद सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न

सन्निहित है। वेदों में समग्रता है। इसमें मनुष्य के वैयक्तिक जीवन, पारिवारिक जीवन और सामाजिक जीवन को सफलतापूर्वक जीने के सूत्र विद्यमान हैं। उन्होंने कहा कि वैदिक विचारों को स्वीकार करने से मनुष्य सभी क्षेत्रों में कर्त्तव्य पालन के साथ उन्नति कर सकता है। वेदों में प्राणीमात्र के प्रति आदर का भाव है तथा सबके जीने के अधिकार को स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त जन्म के आधार पर ऊँचा–नीचा, छोटा–बड़ा, स्पृश्य–अस्पृश्य का भाव वेदों में नहीं है। उपराष्ट्रपति जी ने कहा कि मनुष्य मात्र को वेदों को पढ़ने का अधिकार है जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको उन्नत कर सकता है। वेदों में सम्पूर्ण ज्ञान बीजरूप में विद्यमान है

और इन बीजों को अंकुरित करने, पोषित करने एवं फलित करने की एक विशेष प्रक्रिया है। इसका ज्ञान प्राप्त कर वेदों की शिक्षाओं के आधार पर विश्व की सभी समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है। अपनी इसी विशिष्टता के कारण वेद सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक हैं और करोड़ों वर्षों से मानव जाति का कल्याण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज आतंकवाद, जातिवाद, नस्लवाद, भाषावाद के कारण मजहबों, पंथों, सम्प्रदायों की बाढ़ पूरे विश्व में अपना आतंक फैला रही है जिससे मानवता विभाजित हो रही है और त्राहि–त्राहि कर रही है। इस स्थिति को वेदों के ज्ञान के आधार पर दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वेदों को व्यवहार में लाना आवश्यक है, वेदों की शिक्षाओं को देश तथा विदेश में फैलाये जाने की आवश्यकता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लौटने का नारा दिया था और उन्होंने कहा था कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है अतः विश्व को इस ज्ञान को अपनाकर समरसता का वातावरण पैदा करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत एक प्राचीन देश है और विविधताओं से भरा है। हमें अपने देश पर और भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए और अपनी मातृभाषा का प्रयोग करना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए।

इस अवसर पर चारों वेदों के अंग्रेजी भाष्य का विमोचन किया गया साथ ही शुद्ध 'मनुस्मृति' का विमोचन उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य बालकृष्ण जी, स्वामी चिदानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी आदि ने किया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव श्री सच्चिदानन्द जोशी जी के आभार के उपरान्त उद्घाटन सत्र का समापन हुआ।

विश्व वेद सम्मेलन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता कर रहे पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन की यात्रा में हम चाहे कितनी भी ऊँचाइयों को छू लें लेकिन उसका प्रारम्भ स्वयं से ही होता है। वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान जो विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना। समस्त ज्ञान–विज्ञान का स्रोत और आधार वेद ही हैं। वेदों को त्रयी विद्या कहते हैं, क्योंकि इसमें ज्ञान, कर्म और उपासना का वर्णन है अर्थात् ये मानव मस्तिष्क की तीन प्रक्रियाओं – ज्ञान, इच्छा और अनुभूति की द्योतक है। उन्होंने कहा कि वेदों का सायण, महीधर आदि मध्यकालीन भाष्यकारों ने अन्धविश्वासपूर्ण क्रिया–कलाप और अवैज्ञानिक भाष्य करके लोगों के दिलों में वेदों के प्रति शंका उत्पन्न कर दी थी जिससे वेदों के पठन–पाठन से लोग कतराने लगे और अनेकों अनर्गल मान्यताएँ वेदों के बारे में प्रचलित होने लगी। लेकिन आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने वेदों के अपने विशुद्ध भाष्य से वेदों को प्राचीन तथा पवित्र रूप प्रदान किया और बताया कि वेद की शिक्षाएँ नितान्त विज्ञानमूलक हैं और समाज का प्रत्येक व्यक्ति उनको पढ़ सकता है और लाभान्वित हो सकता है। आचार्य जी ने कहा कि वेद ही विश्व शांति और मानव जाति के कल्याण के आधार हैं। वेद ही धर्म का मूल और मानव संस्कृति के सूत्रधार हैं। उन्होंने कहा कि आज जो कुछ भी हम हैं या हमारे अन्दर कोई गुण है तो वह महर्षि दयानन्द और वेदों की शिक्षाओं का ही परिणाम है। वेद की परम्परा और उसके ज्ञान को अंगीकार करने से ही हम कुछ सीखे हैं और वेद की परम्पराओं ने ही हमें अपने कर्त्तव्य को करने के लिए कटिबद्ध किया है। उन्होंने कहा कि वेद के केवल एक मंत्र को यदि आप अपने जीवन में श्रद्धा पूर्वक धारण कर लें तो निश्चय ही आपका जीवन सफल हो जायेगा और दुनिया के लिए अनुकरणीय बन जायेगा। आचार्य जी ने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति ने हमारी संस्कृति और संस्कारों को खण्ड–खण्ड कर दिया है। हमारा प्रयास है कि हम वेदों के अनुयायी बनकर ऋषियों के अनुगामी बनकर भारतीय संस्कृति और संस्कारों की पुनः प्रतिष्ठित करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। आज वेदों के पठन–पाठन की परम्परा काफी कम हो गई है। इसको बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यदि हम वेदों को पुनः प्रतिष्ठापित करना चाहते हैं तो हम अपने परिवार से इसका प्रारम्भ करें और समाज को वेदों की शिक्षाओं से लाभान्वित करने का प्रयास करें। उन्होंने अगला विश्व वेद सम्मेलन बहुत बड़े स्तर पर हरिद्वार में करने की घोषणा की।

वैदिक विदुषी डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वेद आँख की तरह से हैं। जैसे आँख अंधेरे से हमारी सुरक्षा करती है उसी प्रकार हर प्रकार के ज्ञानान्धकार से वेद हमारी सुरक्षा करते हैं। वेद आदि ग्रन्थ हैं और उसमें प्रदत्त ज्ञान प्रत्येक मानव के लिए कल्याणकारी हैं। उन्होंने कहा कि विश्व की समस्त व्यवस्थाएँ वेद से चली हैं और वेद समस्त विश्व का आदर्श हैं। जो वेदों में है वही सर्वत्र है। डॉ. सूर्या देवी जी ने आह्वान किया कि वेदों की ओर लौटने से सारी समस्याएँ समाप्त हो सकती हैं अतः विश्व को वेद के संविधान के अनुसार चलना सीखना होगा।

इस अवसर पर बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि विश्व के इतिहास में वेद सबसे प्राचीन पुस्तक है। वेद अपौरुषेय तथा ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान है। वेद का ज्ञान सार्वकालिक, सार्वभौमिक, वैज्ञानिक तथा कल्याणकारक है। वेदों में किसी इतिहास, भूगोल, देश, जाति, धर्म, आदि के नाम का वर्णन नहीं है। वेदों पर मानव मात्र का बराबर का अधिकार है। स्वामी जी ने कहा कि वेद संसार की सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। मनु उसे **'सर्व ज्ञान मयो हि सः'** अर्थात् सब प्रकार के ज्ञान से पूर्ण मानते हैं। सृष्टि के आरम्भ में प्राणी मात्र के कल्याण के लिए परमात्मा ने वेदों का ज्ञान प्रदान किया। वेद सबके हैं, सबके लिए हैं और सबको वेद पढ़ने का अधिकार है। इसके पठन–पाठन में स्त्री और शूद्र का कोई भेद नहीं है। इन अलौकिक ग्रन्थों में प्रभु की रचना, नियम, व्यवस्था आदि का चिन्तन है तथा वेद में सूत्र रूप में समस्त विद्याओं का वर्णन है।

स्वामी जी ने कहा कि वेद से ही वह संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, नैतिकता, मानवता, निःसृत हुई है जिसने भारत को स्वर्ण भूमि और विश्व को सभ्य, शिष्ट और आचारवान बनाया है। करोड़ों वर्ष तक मानव जाति वेद से ही ज्ञान और प्रेरणा प्राप्त कर जीवन जीती रही। कालान्तर में भौगोलिक और ऐतिहासिक घटनाचक्रों के चलते शनैः–शनैः इस स्थिति में परिवर्तन आता रहा। पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के पश्चात् एक ऐसा महाशून्य उत्पन्न हुआ जिसकी पूर्ति शताब्दियाँ बीत जाने के बाद भी न हो सकी। हर तरफ पीर, पैगम्बर, मसीहा, अवतार पैदा होने लगे जिन्होंने अपने–अपने पंथ, सम्प्रदाय, मजहब और रिलीजन स्थापित कर लिये और अपनी–अपनी उपासना पद्धति बना ली। एक ऐसा विभाजन हो गया जिसने देवालयों, पूज्यग्रन्थों, उपासना पद्धतियों को ही विभाजित नहीं किया, अपितु मानवता को भी बाँट दिया जिसके कारण पारस्परिक मतभेद, वैमनस्य, संघर्ष, रक्तपात, लूटपाट पैदा होने लगी जिससे धर्म, मानवता, नैतिकता, न्याय व्यवस्था सभी कुछ आहत हुआ। इससे एक ऐसी विषम परिस्थिति बनी कि धर्म के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास, अज्ञान, चमत्कार, प्रदर्शनात्मक रीति–रिवाज, तीर्थ आदि की प्रधानता हो गई। स्वामी जी ने कहा कि आज भी विश्व में यही सब हो रहा है। इन सब सामाजिक बुराईयों से मुक्ति पाने का एक मात्र रास्ता वेद का रास्ता है। वेद समस्त मानव जाति के कल्याण की बात करते हैं। वेद में संगठन मंत्रों में कहा है कि हे मनुष्यों! तुम मिलकर चलो, परस्पर मिलकर संवाद करो, तुम्हारे मन एक जैसे हों, सब मनुष्यों के विचार समान हों, तुम्हारा चिन्तन एक हो और तुम सबके संकल्प एक जैसे हों। सबके हृदय में और मन में उठने वाले विचार एक समान हों जिससे मनुष्यों का संगठन एक जैसा हो। स्वामी जी ने कहा कि कितने उदात्त विचार हैं वेदों के। इन पर आचरण करने की

शेष पृष्ठ 11 पर

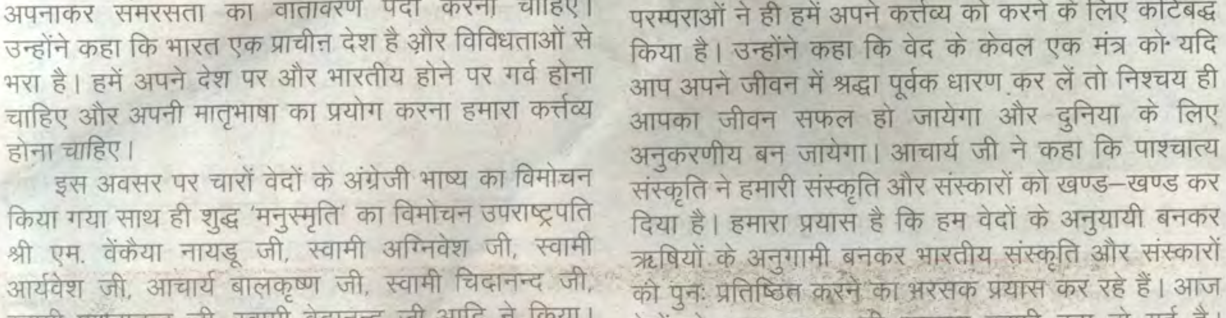

प्रेरक जीवन के धनी स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ. महेश वेदालंकार

इस देश को सद्ग्रन्थों और महापुरुषों की लम्बी विरासत व परम्परा मिली। ये प्रेरक सद्ग्रन्थ तथा पुण्य आत्माएँ जीवन जगत की प्रकाश स्तम्भ हैं। ये ही भूली–भटकी मानव जाति को सन्मार्ग दिखाते हैं। इसी बलदानी परम्परा में स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान और देश, धर्म, संस्कृति के रक्षक उनके कार्यों व आदर्शों को संसार श्रद्धा व सम्मान से स्मरण करता है। वे श्रद्धा, त्याग, सेवा, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति थे। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व आकर्षक व सराहनीय था। उनकी तप, त्याग, तपस्या, सेवा, वीरता, दृढ़ता, राष्ट्र प्रेम आदि वन्दनीय है। उनकी गुरुभक्ति स्पृहणीय है। उनके कार्य अनुकरणीय व प्रशंसनीय हैं। उनका बलिदान प्रेरणीय है, उनका जीवन चरित्र पठनीय है। उनकी दुर्गुण व दुर्व्यसनों से मुक्ति प्रेरक व असाधारण है। उनकी देश, धर्म, जाति तथा वैदिक धर्म की सेवा स्लाघनीय है। उनका सर्वस्व समर्पण स्वर्णिम है। उनका संगीनों के सामने सीना खोलकर खड़े हो जाना नमनीय है। उनका सम्पूर्ण जीवन अतुलनीय है।

जब स्वामी श्रद्धानन्द जी के पूर्व जीवन का सिंहावलोकन करते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति का शब्द चित्र बनता है जिनमें कई बुराईयाँ, नास्तिकता, खान–पान की अपवित्रता, आचरण की मलीनता और भोग–विलास की प्रधानता थी। वे धर्म, कर्म, ईश्वर विश्वास, स्वाध्याय, सत्संग आदि से दूर रहते थे। घटना क्रम बदला। ऋषिवर देव दयानन्द का चुम्बकीय साक्षात् दर्शन, तर्क ज्ञानयुक्त श्रवण और वार्तालाप से ज्ञान चक्षु खुल गये। जीवन की धारा बदल गई।' पूर्व सन्मार्ग के संस्कार जागृत हो उठे। प्रभु कृपा हुई, जीवन का रंग–ढंग ही बदल गया। पतित जीवन से प्रेरक और सन्मार्ग के जीवन की ओर चल पड़े। यह हृदय परिवर्तन से ही सम्भव हुआ। यही प्रभु की कृपा कहलाती है। परमेश्वर जिनका कल्याण चाहता है उनके दुर्गुण, दुर्व्यसन हटाकर भ्रदभाव जागृत कर देता है। आज हमारे जीवनों में अनेक दोष, बुराईयाँ, दुर्गुण, दुर्व्यसन, अहंकार, ईर्ष्या–द्वेष आदि घर किये बैठे हैं जो हमें खोखला कर रहे हैं। हमारी सबसे बड़ी भूल व गलती है कि हम अपने दोषों, कमियों और गलतियों को देखते, मानते तथा जानते नहीं हैं। अपने को निर्दोष और दूसरों को दोषी मान एवं समझ रहे हैं। व्यक्ति का सुधार, निर्माण, उत्थान व कल्याण तभी होता है जब वह अपने दोषों, बुराईयों को महसूस करता है। मुंशीराम ने अपनी कमियों, अवगुणों को महसूस किया। छोड़ने की इच्छाशक्ति और संकल्प किया। वे महामानव श्रद्धानन्द बन गये। सीखने, सम्भलने, सुधरने तथा श्रेष्ठ बनने का मुंशीराम से बढ़कर प्रेरक उदाहरण कहीं न मिलेगा। मुंशीराम श्रद्धानन्द बन सकते हैं? तो हम क्यों नहीं श्रेष्ठ, महान एवं प्रेरक बन सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन हमें बहुत कुछ कह रहा है। बात कहने की नहीं करने की है। 'कल्याण मार्ग का पथिक' उनकी आत्मकथा सभी के लिए पठनीय एवं प्रेरणाप्रद है।

स्वामी श्रद्धानन्द वाक्शूर नहीं है, कर्मशूर थे। जो कहा उसे कर दिखाया। उनके जीवन का कथनी, करनी का पक्ष संसार को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, नास्तिकता से आस्तिकता की ओर, अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर चलने व बढ़ने की शिक्षा एवं प्रेरणा देता रहेगा। ऐसी श्रद्धा, आस्था, विश्वास, व्रती संकल्प, कर्मठ चरित्र इतिहास में दुर्लभ मिलता है। जो इतनी गिरावट से इतनी ऊँचाई पर चढ़ा हो कि जिसने जीवन की सर्वोच्च पदवी संन्यासी पद पाया हो। जिसने स्वर्णिम इतिहास बनाया हो और इतिहास में लम्बी लकीर खींच दी हो, जिसने घनेघोर जंगल में गुरुकुल का दिया जलाया हो, जिसने शुद्धि आन्दोलन का चक्र चलाया हो और अन्त में शुद्धि मिशन के लिए बलिदानी बन गये जिसने दुर्दांत डाकुओं को भी तप, त्याग, साहस, वीरता आदि से अपनी ओर आकर्षित कर लिया हो जो हिंसक जन्तुओं को भी अपने सान्निध्य में बैठाने का साहस रखता हो वह इतिहास पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द थे।

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द जी के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी थे। ऋषिवर ने जो वाणी, लेखनी और आर्य समाज के माध्यम से जो सिद्धान्त, विचार, आदर्श तथा वैदिक चिन्तन दिया, उन्हें इस महापुरुष ने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियात्मक साकार रूप दिया। वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पुनरूद्धारक थे। उनका जीवन कठिनाईयों, संघर्षों, चुनौतियों और विरोधों में निकला। किन्तु उन्होंने कभी हार नहीं मानी। चरैवेति–चरैवेति के मूल मन्त्र को कभी नहीं छोड़ा। अपने गुरु का मान बढ़ाया। वैदिक धर्म की ध्वजा को ऊँचा उठाया। गुरुकुल कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मारक है उनके जीवन की सम्पूर्ण पूंजी है। किन्तु आर्य समाज का गौरव वह स्मारक आज ढह रहा है। विकृत और मूल से हट रहा है। हम सब बेखबर हैं।

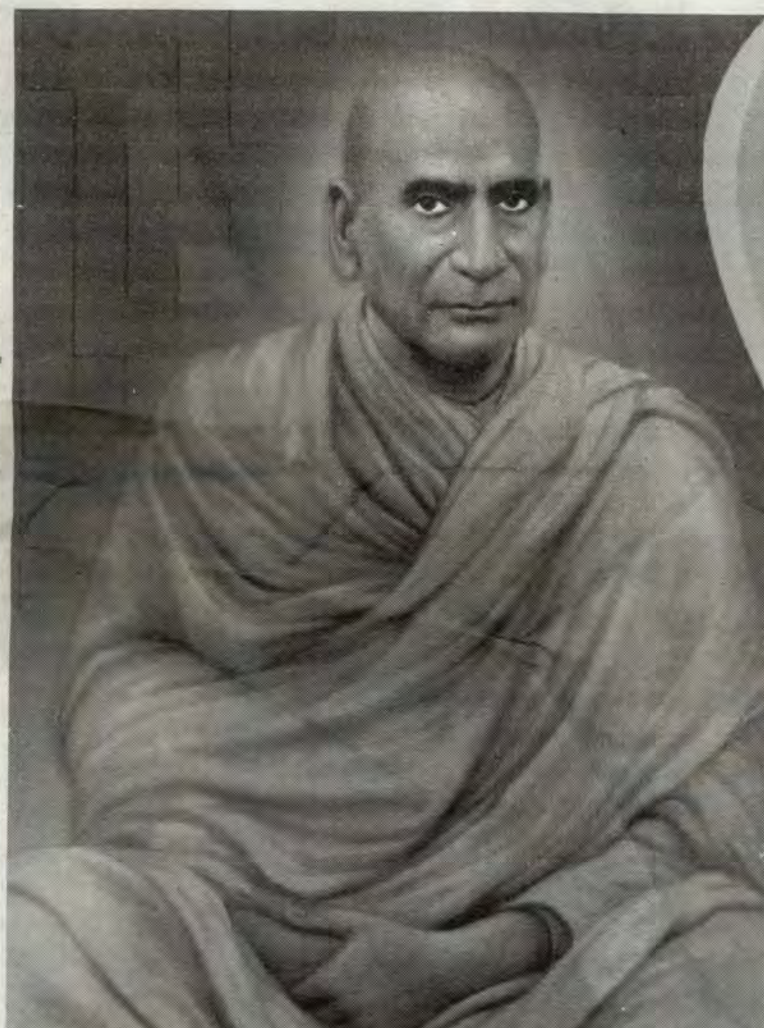

इतिहास साक्षी है – 'भूतो न भावी'। स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे महापुरुष थे जिन्हें जामा मस्जिद से वेद मन्त्र बोलकर हिन्दू–मुस्लिम एकता का संदेश देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चांदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए गोरखा सिपाहियों के सामने सीना तानकर खड़े हो जाना और कहना चलाओ मेरे सीने पर गोलियाँ? स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निडर, निर्भीक, देशभक्त साहसी ही कह सकता था। शुद्धि आन्दोलन में प्राणों का खतरा मोल लेने वाले हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। यही शुद्धि चक्र अन्त में उनके बलिदान का कारण बना। स्वामी जी में अपार तप, त्याग, सेवा, साहस, वीरता, बलिदान आदि के भाव कूट–कूट कर भरे थे। उनकी शिक्षा, धर्म, संस्कृति, शुद्धि, राजनीति, वैदिक धर्म प्रचार आदि के क्षेत्र में अनूठे वीर पुरुष के रूप में पहचान थी। उनके बलिदान पर जो श्रद्धांजलियाँ और उदगार देश–विदेश से आये थे उससे उनके सहज ही व्यक्तित्व एवं कृतित्व का पता चलता है। किसी ने उन्हें राष्ट्र निर्माता, किसी महान स्वतंत्रता सेनानी, किसी ने पथ–प्रदर्शक, किसी ने वीरता और बलिदान की मूर्ति, किसी ने गुरुकुल शिक्षा का पुनरूद्धारक, किसी ने हिन्दू जाति का चौकीदार, किसी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता का पक्षधर आदि अनेक विशेषणों और विशेषताओं से सम्मानित और स्मरण किया था। उनकी स्मृति और कार्यों को अजर–अमर बनाये रखने के लिए प्रतिवर्ष श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आता है। जलसे, जलूस, लंगर, फोटो–माला, स्वागत, नारों आदि में सिमट कर रह जाता है। कहीं वैदिक मिशनरी स्प्रिट रचनात्मक, निर्माणात्मक, प्रभावपूर्ण और लोगों को जोड़ने वाली चेतना नजर नहीं आ रही है। सर्वत्र निराशा, तटस्थता, स्थिरता और किं कर्त्तव्य विमूढ़ता छा रही है जबकि आज के वातावरण व हालात में जीवन जगत को आर्य विचारधारा की अत्यन्त आवश्यकता है। वैदिक धर्म ही संसार को सीधा, सच्चा व सरल मार्ग दिखा सकता है। आर्य समाज की पीड़ा है कि तेजी से संन्यासी, विद्वान, वक्ता, धर्माचार्य, भजनोपदेशक, प्रचारक, समर्पित सेवा भावी कार्यकर्ता, सदस्य आदि घट रहे हैं और जा रहे हैं। नये बन नहीं रहे हैं। इस दिशा में बनाने की भावना व ईमानदारी से योजना कार्यक्रम, संकल्प, प्रकल्प भी नहीं हो रहे हैं। केवल प्रस्ताव, मीटिंगों, वादों, भाषणों आदि से बात नहीं बनेगी। सच्चाई एवं ईमानदारी से आर्य संगठनों, संस्थाओं, गुरुकुलों, समाजों आदि को आत्मशुद्धि, आत्मचिन्तन, चुनाव प्रक्रिया, पदों की आयु और समय सीमा आदि का पुनर्मूल्यांकन करने की तुरन्त जरूरत है। सभी जगह जो होना चाहिए वह नहीं हो रहा है, जो नहीं होना चाहिए वह हो रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का यह प्रेरक अनुभव सिद्ध संदेश कह रहा है कि आर्य समाज को सेवकों की जरूरत है, नेताओं की नहीं। आज आर्य समाज की दुःखद त्रासदी है कि सभी नेता बनना चाह रहे हैं सेवक कोई नहीं बनना चाहता है। सब ऊपर बैठना चाहते हैं नीचे कोई नहीं रहना व बैठना चाहता है। झगड़े, पद–प्रतिष्ठा पैसे के लिए हो रहे हैं। किसी को दयानन्द, वेद प्रचार, आर्य समाज के प्रचार–प्रसार की बेचैनी, दर्द और झटपटाहट नहीं सता रही है। सब जगह मूल में भूल हो रही है। केवल नारों, जयकारों तथा झण्डों से बात नहीं बनेगी। यदि ऋषि और आर्य समाज को अजर–अमर रखना और आगे बढ़ना है तो नियम, सिद्धान्तों, विचारों व संगठन को अविलम्ब एकता, अनुशासन में लाना तथा झगड़ों विवादों से बचाना होगा। विवादों से बात नहीं संवादों से बात बनेगी। सर्वत्र लम्बे समय से एकाधिकार की भावना, पदों को न छोड़ने का हठ, अहंकार और दुराग्रह आर्य समाज को खोखला, कमजोर व संकुचित कर रहा है।

आर्यो! उठो, जागो अपने स्वरूप को समझो! श्रद्धानन्द जी का बलिदान हमें पुकार रहा है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए जीवन बलिदान कर दिया। क्या हमें ऋषि मिशन व आर्य समाज की एकता, संगठन व उन्नति के लिए स्वार्थ, अहंकार और पदों को नहीं छोड़ सकते हैं? पदों से कदों को ऊँचा करो। कहाँ व्यर्थ की बातों, ईर्ष्या, द्वेष तथा विवादों में उलझ रहे हैं। ऋषि की आत्मा दुःखी होकर हमें क्या कह रही होगी। क्या हमने इसीलिए आर्य समाज बनाया था, यह बलिदान पर्व हमें बहुत कुछ कह रहा है। आईये! विचारें चिन्तन करें।

विश्व वेद सम्मेलन 15 से 17 दिसम्बर, 2017 के कार्यक्रम की चित्रमय झलकियाँ

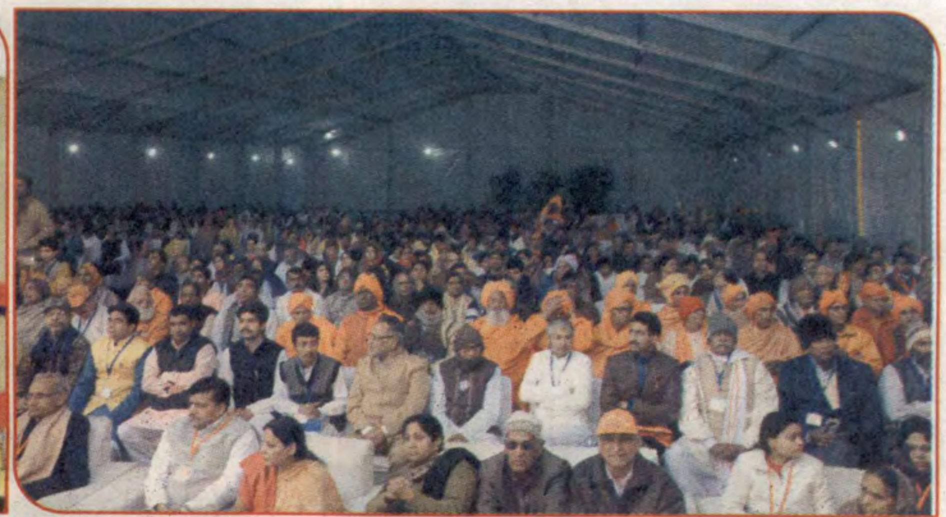

विश्व वेद सम्मेलन 15 से 17 दिसम्बर, 2017 के कार्यक्रम की चित्रमय झलकियाँ

विश्व वेद सम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

विश्व वेद सम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

आजादी के दीवाने अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी एवं रोशन सिंह

– कु. भावना

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) निवासी पं. मुरलीधर तिवारी के यहाँ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी विक्रमी सम्वत् १८८४ को राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ। वे कचहरी में स्टाम्प बेचकर जीवन यापन करते थे। जब राम प्रसाद चौदह वर्ष के थे, तब उन्हें घर में चोरी करने, सिगरेट और भांग पीने तथा श्रृंगाररस पूर्ण उपन्यास पढ़ने की बुरी आदत पड़ गई। एक दिन नशे की हालत में पकड़े जाने से बुरी आदतें दूर हुई। परन्तु सिगरेट बहुत ज्यादा पीते थे। सहपाठी श्री सुशीलचन्द्र सेन के विशेष प्रयत्नों से यह बीमारी भी छूटी। समय बदला, रामप्रसाद बिस्मिल के धार्मिक संस्कार जागृत हुए। एक सज्जन की देखादेखी व्यायाम करने लगे। ब्रह्मचर्य पालन व नियमित व्यायाम करने से उनका शरीर बल्ष्ठि व बुद्धि तेज हो गई। मुंशी इन्द्रजीत की प्रेरणा से वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए जो समाज सुधार व स्वतन्त्रता आन्दोलन में अग्रणी संस्था थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'सत्यार्थप्रकाश' के अध्ययन से तो उनका जीवन ही बदल गया। पर्यावरण शुद्धि व जनकल्याण के लिए वे 'यज्ञ' करते तथा विद्वानों की सेवा करते।

उन्होंने सर्वप्रथम शाहजहाँपुर में 'आर्यकुमार सभा' की स्थापना की। इसमें बच्चों व युवकों को देशभक्ति और समाज सेवा की प्रेरणा दी जाती थी। 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत युवकों को आत्मरक्षा व शस्त्र–शास्त्र का अभ्यास कराया जाता था। इसका साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक शुक्रवार होता था। इसमें वाद–विवाद, भाषण व धार्मिक पुस्तकों का पठन–पाठन हुआ करता था। उन्होंने 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत अश्फ़ाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह आदि अनेक देशभक्त नौजवान तैयार किये। भाई परमानन्द को फाँसी की सजा सुनकर उनके शरीर में आग लग गई। उन्होंने विचारा कि ''अंग्रेज बड़े पापी हैं, इनके राज्य में न्याय नहीं, मैं इसका बदला अवश्य लूँगा।'' जीवन भर अंग्रेजों के राज्य को विध्वंस करता रहूँगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा कर चुकने के पश्चात् वे सुप्रसिद्ध देशभक्त संन्यासी स्वामी सोमदेव जी से मिले, जो अपने भाषणों में जन–जागृति व आजादी के महान कार्य में जुटे हुए थे। अंग्रेजों के अत्याचारों के विरूद्ध उन्होंने क्रान्तिकारी युवकों का संगठन बनाया। इटावा के शिक्षक पं. गेन्दालाल दीक्षित उनके 'गुरु' थे। उनसे वे बन्दूक, पिस्तौल आदि शस्त्र चलाने सीखते। रामप्रसाद बिस्मिल ने अमेरिका को आजादी कैसे मिली, स्वदेशी रंग, क्रान्तिकारी जीवन, मन की लहर आदि पुस्तकें प्रकाशित कर क्रान्तिकारी दल के लिए धन की व्यवस्था की। किन्तु यह पर्याप्त न थी।

अंग्रेज सरकार भारतीयों पर हर तरह के जुल्म करती थी। अतः क्रान्तिकारियों ने निश्चय किया कि 'काकोरी रेलवे स्टेशन' के निकट रेलगाड़ी में सरकारी खजाने को लूटकर दल की गतिविधियाँ तेज की जाये। सभी साथियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में मिलकर कार्य करने की शपथ ली। अन्ततोगत्वा काकोरी के करीब रेलगाड़ी खड़ी करके सरकारी खजाना रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह आदि मात्र दस क्रान्तिकारियों ने लूट लिया। इससे दस हजार रुपये उनके हाथ लगे। कार्यकर्ताओं को इससे बड़ा उत्साह मिला। यह धन स्वाधीनता संग्राम में व्यय होने लगा।

काकोरी डकैती के बाद पुलिस बहुत सचेत हो गई। दल के सदस्य बनवारी लाल के सरकारी गवाह बन जाने से क्रान्तिकारी संगठन को गहरा धक्का लगा। राजद्रोहात्मक साहित्य पकड़ा गया। काकोरी काण्ड में लिप्त सभी सदस्य पकड़े गये। केवल चन्द्रशेखर 'आजाद' ही थे, जो बन्दी न बनाये जा सके। क्रान्तिकारियों को अमानवीय यातनाएँ दी जाने लगीं। अशफ़ाक उल्ला खाँ को गहरी पीड़ा पहुँचाई गई। दल के सदस्य राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी कलकत्ता से गिरफ़्तार किये गये। अंग्रेजों के जुल्मों का क्या कहना?किसी कवि ने कहा है –

देश हित वार दीं, अनेक ही जवानियाँ।
जिनके खून से लिखी, स्वदेश की कहानियाँ।।

अशफ़ाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल को बड़ा भाई मानते थे। अतः इसी लगाव के कारण ब्रिटिश सरकार उन्हें बिस्मिल का सहकारी मानती थी। अशफ़ाक को हर प्रकार से पीड़ा पहुँचाने के बाद अंग्रेजों ने उन्हें बहकाने के लिए मुसलमान पुलिस अफसर को भेजा। पर आजादी का दीवाना अशफ़ाक उल्ला खाँ तो सच्चा देशभक्त था, अपने कर्तव्य से विमुख न हुआ। वीराग्रणी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह को जज ने फाँसी की सज़ा व शचीन्द्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, मुकन्दी लाल, मन्मथ लाल गुप्त को कालेपानी की कठोर यातनाएँ दी गई। १६ दिसम्बर, १६२७ को गोरखपुर जेल में उन्हें फाँसी पर लटकाने से पूर्व उनकी 'अन्तिम इच्छा' पूछी गई, जिसे सुनकर कर्मवीर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने उच्च स्वर से कहा – 'अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो' यह मेरी अन्तिम कामनाहै। वेद के पवित्र मन्त्र व जोशीले गीत गाते हुए बिस्मिल और उनके साथियों ने हंसते हुए फाँसी के फन्दे चूम लिये और सदा के लिए अमर हो गए।

इन क्रान्तिकारियों ने देशवासियों से अन्तिम प्रार्थना करते हुए कहा था कि वे सुशिक्षित बनें तथा जो कुछ करें, सब मिलकर देश की भलाई के लिए करें। इसी में सबका भला है।

मरते बिस्मिल, रोशन लाहिड़ी, अशफ़ाक अत्याचार से।
होंगे सैकड़ों पैदा इनके खून की धार से।।

'अशफ़ाक मेरा सच्चा मित्र एक संस्मरण' नाम शीर्षक से पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने लिखा कि –

''मैंने तुमने एक थाली में भोजन किया। मेरे हृदय से वह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू–मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथा अगाध प्रीति रखते थे। हाँ! तुम मेरा नाम लेकर पुकार नहीं सकते। तुम मुझे सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हारे हृदय कम्प दौरा हुआ, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह से बारम्बार 'राम', 'आय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई बन्धुओं को आश्चर्य था कि 'राम–राम' की रट थी। उस समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो 'राम' के भेद जानते थे। तुरन्त मुझे बुलाया गया। मुझसे मिलने पर तुम्हें शान्ति हुई, तब सब लोग 'राम–राम' के भेद समझे।''

''मैंने तुमने एक थाली में भोजन किया। मेरे हृदय से वह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू–मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथा अगाध प्रीति रखते थे। हाँ! तुम मेरा नाम लेकर पुकार नहीं सकते। तुम मुझे सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हारे हृदय कम्प दौरा हुआ, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह से बारम्बार 'राम', 'आय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई बन्धुओं को आश्चर्य था कि 'राम–राम' की रट थी। उस समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो 'राम' के भेद जानते थे। तुरन्त मुझे बुलाया गया। मुझसे मिलने पर तुम्हें शान्ति हुई, तब सब लोग 'राम–राम' के भेद समझे।'' – राम प्रसाद बिस्मिल

बिस्मिल ने जेल में फाँसी से ३ दिन पूर्व दिल को हिला देने वाली आत्मकथा में यह लिखा है – ''अशफ़ाक! तुम्हारे दिल में मुल्क की खिदमत करने की इच्छा थी। तुम मेरे छोटे भाई जैसे हो गये। सबको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्यसमाजी और मुसलमान का मेल कैसा?तुम एक सच्चे मुसलमान थे और और सच्चे देशभक्त भी। तुमने हमेशा चाहा कि मुसलमानों की खुदा अक्ल दे कि वे हिन्दुओं के साथ मिलकर हिन्दुस्तान की भलाई करें...... मैंने, अशफ़ाक! अपना तन–मन–धन सब मातृसेवा में अर्पण करके तुम जैसे अपने प्यारे मित्र को भी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।''

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
विश्व इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को

दिल्ली में होगा भव्य आयोजन

सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985

ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

छपरौली में बेटी के जन्म पर नामकरण व यज्ञ का कार्यक्रम

संस्कारों का जीवन में विशेष महत्व है

–स्वामी आर्यवेश

वंश को आगे बढ़ाने के लिए बेटी व बेटे दोनों को समान शिक्षा, संस्कार व समान अवसर दें

– प्रो. विट्ठल राव आर्य

देश में बेटियों के जन्म को उत्सव के रूप में मनाया जाए

– मधुर प्रकाश

बेटियों को शिक्षा, बेटों को संस्कार दे दो फिर माँ, बहन, बेटियों की सुरक्षा की चिंता समाप्त हो जायेगी

– संजीव खोखर

बागपत : छपरौली में बेटी के जन्म पर नामकरण व यज्ञ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। धर्मेन्द्र पहलवान ने अपनी बेटी के नामकरण का कार्यक्रम समारोह पूर्वक मनाया। स्वामी आर्यवेश जी ने ऋषि दयानंद द्वारा प्रतिपादित संस्कार विधि के अनुसार नामकरण संस्कार करवाया। इस अवसर पर यज्ञ करके उपस्थित महिलाओं व पुरुषों को भी इस प्रकार के कार्यक्रम करके बेटियों को भी समान अवसर प्रदान करने का संकल्प दिलवाया। नवजात शिशु का नाम आदिति आर्या रखा गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से आशीर्वाद देने के लिए दिल्ली से आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, हैदराबाद से प्रो. विट्ठल राव आर्य, मधुर प्रकाशन के मालिक श्री मधुर प्रकाश, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य व छपरौली के चेयरमैन संजीव खोखर सहित कई विशेष महानुभाव पहुंचे। सभी ने जीवेम शरदः शतम् का आशीर्वाद भी दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुये कहा कि संस्कारों का जीवन में विशेष महत्व है। आज समाज से संस्कार गायब हो रहे हैं उसी का परिणाम है कि समाज का ताना बाना टूटता दिखाई देता है। संस्कारों के अभाव में ही समाज से संवेदनशीलता समाप्त हो रही है। यही कारण है कि आज माता–पिता व बुजुर्गों का सम्मान होना बंद हो गया है। समाज को सही दिशा की ओर लेकर जाना है तो संस्कारों के महत्व को समझना पड़ेगा।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुये हैदराबाद से पधारे सार्वदेशिक सभा के महामंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के महामंत्री प्रो. विट्ठल राव आर्य ने कहा कि आज बेटियों को लोग इस विकृत मानसिकता के कारण पेट में मार रहे हैं क्योंकि वो मानते

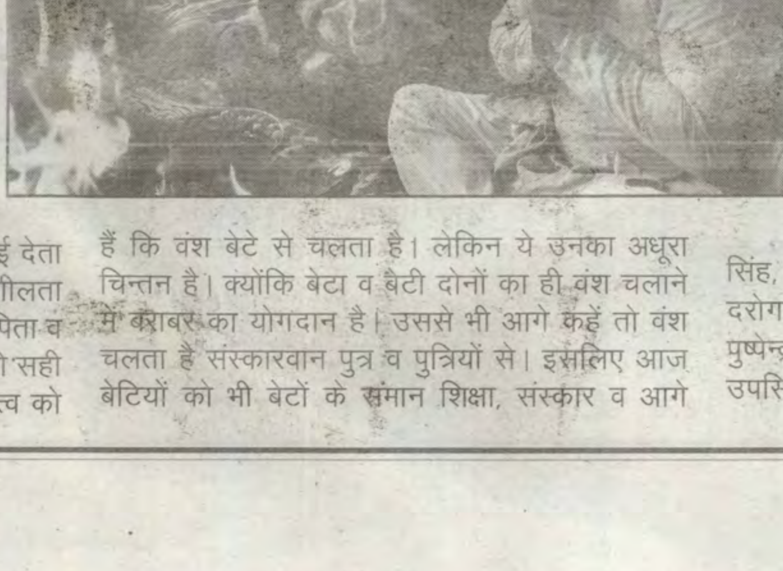

हैं कि वंश बेटे से चलता है। लेकिन ये उनका अधूरा चिन्तन है। क्योंकि बेटा व बेटी दोनों का ही वंश चलाने में बराबर का योगदान है। उससे भी आगे कहें तो वंश चलता है संस्कारवान पुत्र व पुत्रियों से। इसलिए आज बेटियों को भी बेटों के समान शिक्षा, संस्कार व आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने चाहिए ताकि जीवन की ये गाड़ी सहज में चल सके। यदि इस गाड़ी का एक पहिया ठीक नहीं होगा तो निश्चित मानिये कि जीवन यात्रा का रथ आगे नहीं बढ़ पायेगा।

दिल्ली से पधारे मधुर प्रकाशन के चेयरमैन मधुर प्रकाश ने कहा कि आज महिला किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। देश के किसी भी क्षेत्र में जब बेटा पैदा होता है तो उत्सव होते हैं परन्तु आज बेटियों के जन्म को भी उत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए।

छपरौली के चेयरमैन संजीव खोखर ने कहा कि आज बहनों की सुरक्षा भी एक बहुत बड़ा मुद्दा है पर उनको सुरक्षा किन से चाहिए। जिन से सुरक्षा चाहिए वो भी इसी समाज का हिस्सा हैं। इसलिए आज यदि हम अपनी बेटियों को शिक्षा, अपने बेटों को संस्कार देंगे तो माँ, बहन व बेटियों की सुरक्षा की चिंता स्वतः समाप्त हो जायेगी।

इस अवसर पर मुख्य रूप से आर्य समाज छपरौली के प्रधान श्री कृष्णपाल खलीफा जी, श्री नरेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज छपरौली, आर्यसमाज के पूर्व प्रधान श्री महक सिंह आर्य, श्री धर्मबीर सिंह प्रधान मुकंदपुर, धर्मबीर आर्य, श्री राजसिंह आर्य, योगेंद्र आर्य, श्री हुकम सिंह, कटार सिंह, श्री श्याम मोहन, श्री शिव कुमार आर्य, श्री तेजपाल दरोगा, श्री योगेन्द्र आर्य, श्री सुशील रुहेला, मास्टर पुष्पेन्द्र, चौधरी खिलारी सिंह पूर्व चेयरमैन, हरबीर आदि उपस्थित रहे।

पृष्ठ–3 का शेष

ऐतिहासिक विश्व वेद सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न

आवश्यकता है। आज विश्व में अशांति, घृणा, बैर–विरोध, हिंसा एवं युद्ध का वातावरण है। समूचा विश्व इसी विद्वेष एवं घृणाजन्य आतंकवाद से पीड़ित है। इसके पीछे विचारों की असमानता है। विश्व के विभिन्न मानव समुदायों में हृदय और मन की असमानता है। उनके संकल्प, उनके भाव अलग–अलग हैं। वेद कहता है कि सब मनुष्य मिलकर चलें। सब मनुष्यों के चिन्तन और सोच में समानता हो। जब सबके हृदय, मन एक समान होंगे तभी विश्व शांति हो सकती है। मानव मात्र का कल्याण, मानव मात्र में सब प्रकार की समानता, समस्त मानव समाज का सब प्रकार से कल्याण हो यही वेद की शिक्षा है, संदेश है। स्वामी आर्यवेश जी ने संस्कृति एवं संस्कार की रक्षा करने का आह्वान करते हुए कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, क्योंकि वर्तमान की शिक्षा पद्धति एकांगी है और दूषित है। उन्होंने घोषणा की कि जुलाई, 2018 में सार्वदेशिक सभा की ओर से विश्व गुरुकुल सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जायेगा।

वेद सम्मेलन में उद्‌बोधन देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने कहा कि यह देश आत्मज्ञान तथा आध्यात्मिकता के कारण दुनिया का सिर–मौर था और ये तभी तक रहा जब तक वेद का दीपक घर–घर में जलता रहा। अपनी समृद्धि के लिए, अपनी शांति के लिए तथा अपने देश की प्रगति के लिए आज पुनः वेद की ज्योति घर–घर में पहुँचाने का अवसर आ गया है। जिस दिन वेद का ज्ञान संसार में फैलेगा तब लोगों के हृदयों में वैर–वैमनस्य दूर होकर तथा आतंकवाद और अपराध समाप्त होकर विश्व एक कुटुम्ब बन जायेगा। सब तरफ शांति, समृद्धि तथा समभाव का वातारण होगा। प्रो. साहब ने कहा कि वेदों में कहीं पर भी ऐसा भाव नहीं है कि रंग, भाषा आदि के आधार पर भेदभाव लक्षित होता हो। उन्होंने कहा कि वेद की शिक्षाओं के आधार पर गरीबी, भूखमरी, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, आतंकवाद आदि सभी विषयों से सम्बन्धित समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है। आज आवश्यकता है भौतिकवादी जीवन के साथ आध्यात्मिक जीवन का सामंजस्य बैठाने की। उन्होंने कहा कि आज विज्ञान जितना प्रगति कर रहा है वह वेद के उतने ही नजदीक पहुँच रहा है।

विश्व वेद सम्मेलन के अवसर पर बहाई समुदाय के अध्यक्ष डॉ. अली मर्चेन्ट ने कहा कि हमारे लिए यह बहुत बड़े सौभाग्य की बात है कि विश्व वेद सम्मेलन में भाग लेने का मौका मिल रहा है। उन्होंने कहा कि मानव जाति की आध्यात्मिक उन्नति का आधार वेद ही हैं। यदि मानव जाति उत्थान, विकास, प्रगति चाहती है तो वेदों का अध्ययन करना होगा तथा वेद ज्ञान के रास्ते पर चलना होगा। वेद हमारी प्राचीन धरोहर है। आज 21वीं सदी में इसे विश्व के सामने कैसे प्रस्तुत किया जाये यह विचारणीय है। उन्होंने कहा कि परमात्मा एक है और सभी धर्मों का स्रोत वेद ही है। मानव एकता, भाईचारा तथा शांति आदि की स्थापना के लिए वेदों की शिक्षाओं को ग्रहण करना ही होगा। उन्होंने कहा कि एकता, भाईचारा और प्रेम में असीम शक्ति है और वेदों के ज्ञान के द्वारा हम वैश्विक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

तृतीय सत्र के मुख्य अतिथि शिक्षा शास्त्री एम.आई.टी. विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. विश्वनाथ कराड़ जी ने कहा कि आज भारत के एक सपूत स्वामी अग्निवेश जी ने दुनिया को वेद का संदेश देने का बीड़ा उठाया है। आज का दिन हमेशा याद रखा जायेगा। उन्होंने कहा कि आज की दुनिया को एक नया रूप देने का अवसर आ गया है। सारी दुनिया को ज्ञान का, सुख का, समृद्धि का, शांति का, सद्भाव का संदेश विश्व वेद सम्मेलन के माध्यम से दिया जायेगा। यह आयोजन भारतीय अस्मिता को जगाने का प्रयास है। वेद के छोटे–छोटे वाक्य बहुत बड़ा संदेश देते हैं जिनको आज भुला दिया गया है। आज सारे विश्व में भय का वातावरण है उसे दूर करने के लिए वेदों का रास्ता अपनाना पड़ेगा। वेदों का संदेश दुनिया को समझाना पड़ेगा और यही इस सम्मेलन का उद्देश्य है।

सुपर कम्प्यूटर परम के जनक डॉ. विजय पी. भटकर जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वेदों को अपौरुषेय माना गया है। आज का युग विज्ञान का युग है और कम्प्यूटर ने सबकुछ बदल डाला है। मानव सभ्यता को बदल डाला है। कम्प्यूटर का सिद्धान्त सांख्य दर्शन में है। उन्होंने कहा कि वेदों में केवल आध्यात्मिकता ही नहीं है, अपितु विज्ञान भी है। सब धर्मों का मूल वेद में बताते हुए उन्होंने कहा कि वैदिक ज्ञान प्रणाली एक समग्र ज्ञान प्रणाली है और सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है। उन्होंने कहा कि वेदों में समस्त ज्ञान बीज रूप में अवस्थित है जिसके गहन शोध की आवश्यकता है। कम्प्यूटर के लिए संस्कृत सबसे अच्छी और उपयुक्त भाषा है।

मुस्लिम धर्म के विद्वान मौलाना ए.आर. शाहीन कासमी ने अपने वक्तव्य का प्रारम्भ वेदमंत्र तथा गायत्री मंत्र पढ़कर किया। उन्होंने कहा कि इस्लाम अपने आपको सनातन धर्म का अंग मानता है। एकेश्वरवाद की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ईश्वर एक है और कुरान में भी यही कहा गया है कि ईश्वर एक है और वह बहुत पूजनीय है। उन्होंने कहा कि वेद ही सभी धर्मों का मूल स्रोत है और वेदों की शिक्षाओं के द्वारा विश्व की सभी समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है।

परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द जी ने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और वेद निहित कर्मों को ही आर्यों ने धर्म का नाम दिया। जबसे हमलोग अपने को आर्य कहना भूल गये हमारा अपने ही वेद, शास्त्र, उपनिषदों से नाता टूट गया। अगर हमारा नाम आर्य है तो हमें श्रेष्ठ बनना ही होगा। उन्होंने कहा कि वेद के एक–एक पद में, एक–एक शब्द में, एक–एक अक्षर में बड़ा विज्ञान निहित है। वेद को अपने दिलों से, जीवन से जोड़कर चलना होगा तथा विज्ञान और अध्यात्म का बैलेन्स बनाना होगा तभी कल्याण हो सकता है। उन्होंने कहा कि आज यहाँ एक इतिहास लिखा गया जब मुस्लिम बहनों ने वेद मंत्रों को बोलकर यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। यह वेद का ही ज्ञान है कि वह सबको मिलकर चलने की प्रेरणा देता है। अब समय आ गया है कि तीन तलाक को तलाक दिया जाये। उन्होंने कहा कि समाज के साथ नमाज का मिलना बहुत जरूरी है और यह तभी हो सकता है जब हम पूरे विश्व को वेद की शिक्षाओं का पाठ पढ़ायें।

नागपुर विद्यापीठ के पूर्व कुलपति श्री एस.एन. पठान ने कहा कि वेद एक ऐसी विरासत है जो हिन्दू, मुसलमान को जोड़ने वाली विधा है। उन्होंने कहा कि हिन्दू–मुसलमान को जोड़ने के लिए वेद के माध्यम से एकेश्वरवाद को सामने रखकर एकता का कार्य किया जा सकता है। उन्होंने योग और नमाज में समानता की बात करते हुए कहा कि नमाज भी एक प्रकार का योग ही है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज सारी मानवता को जोड़ने में सीमेंट का काम कर सकता है।

इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि राज्यसभा के उपाध्यक्ष प्रो. पी. जे. कुरियन ने कहा कि वेदों का यह संदेश कि सारा संसार एक है मुझे बहुत अच्छा लगता है। वेदों में ईश्वर को एक बताया गया है और इसे मैं भी स्वीकार करता हूँ। वेदों में महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिया गया है यह बहुत ही उच्च विचार है। भारत सरकार भी इस दिशा में निरन्तर प्रयास कर रही है और महिलाओं को लोकसभा व राज्यसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण के लिए प्रयासरत है।

डॉ. मोहम्मद हनीफ शास्त्री ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र का घोषणा पत्र वैदिक शिक्षाओं से मिलता–जुलता है। क्योंकि वेद किसी जाति, किसी देश, किसी वर्ग विशेष की बात न करके मानव मात्र के कल्याण की बात करता है।

अमेरिका से पधारे विश्व संविधान व विश्व सरकार अभियान के अध्यक्ष डॉ. ग्लेन टी. मार्टिन ने बताया कि वेद विश्व शांति की बात करता है, मानव मात्र के कल्याण की बात करता है लेकिन हम 1700 बिलियन डॉलर हथियारों के निर्माण पर खर्च करके संसार को युद्ध की आग में झोंकने का प्रयास कर रहे हैं। यदि संसार से गरीबी हटानी है और सबको सुख–सुविधाएँ देनी है तो इस खर्च के एक तिहाई भाग से ही सबको खान–पान वस्त्र और रहने की सुविधा प्रदान कर सकते हैं।

वैदिक विद्वान आचार्य वागीश जी ने कहा कि कोई भी व्यक्ति दूसरे के सहयोग के बिना सुखी नहीं रह सकता और वेद मानव मात्र के सहयोग की बात करता है। इसलिए वेद की बात मानकर हम एक–दूसरे से मित्रता का व्यवहार करें तो समाज में सुख–शांति स्थापित हो सकती है। जब हम अपनी सुविधा के साधनों का उपयोग करते समय उसके बनाने वाले का धर्म, जाति, मजहब नहीं पूछते तो फिर आध्यात्मिक चिन्तन के समय हम अपने–अपने मजहबों के संकीर्ण दायरे में क्यों सिकुड़ जाते हैं। वेद कहता है कि अच्छे विचार चारो तरफ से ग्रहण करो।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ है तथा यह ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान है। किसी मनुष्य ने इसे नहीं लिखा। वेदों के सभी सिद्धान्त सृष्टिक्रम के अनुकूल एवं वैज्ञानिक है। वेदों में सभी के हित की कामना, उदारता, विशालता और व्यापकता आदि विशेषताएँ हैं। इसका मुख्य स्वर मानवता है। 'बसुधैव कुटुम्बकम' की मान्यता वेदों में ही है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना वेद ही करता है। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन जगत को उन्नत

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

ऐतिहासिक विश्व वेद सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न

करने के सूत्र वेदों में दिये गये हैं और इनको आचरण में लाना आवश्यक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि समस्त समतामूलक समाज बनाने के लिए वेदों के अध्ययन–मनन की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को गुरुकुलों में पढ़ने के लिए भेजें जहाँ वेदों का ज्ञान प्रदान किया जाता है। वेदों की शिक्षाएँ समाज को जोड़ने का कार्य करती हैं जिन्हें अपनाने की जरूरत है।

परमार्थ निकेतन से पधारीं साध्वी भगवती सरस्वती जी ने शाकाहार के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए विश्व में माँसाहार की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि विदेश में शिक्षा तो बहुत है लेकिन भारत में शिक्षा के साथ संस्कार भी है। यदि संस्कार का बीजारोपण नहीं हुआ तो शिक्षा व्यर्थ है।

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज इस विश्व वेद सम्मेलन के अवसर पर हम सबको संकल्प लेना है कि जन्मना जाति को बढ़ावा नहीं देंगे। उन्होंने कहा कि वेदों की रक्षा का दायित्व आर्य समाज का है और आज आर्य समाज के ही एक संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने वेदों को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिया है।

इस अवसर पर विश्व वेद सम्मेलन के सह–संयोजक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने कहा कि आज वेदों को केवल कर्मकाण्ड से जोड़कर देखा जाता है जबकि वेद का पथ ही जीवन का सच्चा सुख, शांति तथा आनन्द दे सकता है। वेद मानव जीवन के रहस्य की पूँजी है।

इस अवसर पर वैदिक विदुषी नंदिता शास्त्री, श्री ओमपूर्ण स्वतंत्र, स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्या पवित्रा वेदालंकार, सांची विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश के कुलपति प्रो. शशिप्रभा कुमार, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सोमपाल शास्त्री, साउथ अफ्रीका से पधारे स्वामी वेदानन्द जी, डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, कैंसर विशेषज्ञ डॉ. धनेश जी, श्री विवेक मुनि जैन सन्त, सरदार देवेन्द्र सिंह साहनी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री आरिफ मोहम्मद खान, चेन्नई से पधारे शांति प्रकाश जी, क्रांतिकारी अशफ़ाक उल्ला खाँ के पौत्र अशफाक उल्ला, स्वामी यादवेन्द्र जी पंजाब, डॉ. पंकज गुप्ता जी, श्री टी.वी. कृष्णमूर्ति, राजयोगिनी गिन्नी सिटी, डॉ. महावीर अग्रवाल, डॉ. कृष्णा आचार्या संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, कमलेश सी. चौकसी गुजरात, प्रो. जयदेव जी, डॉ. देवेन्द्र प्रसाद मिश्र, ठा. विक्रम सिंह जी, प्रो. विजय करण जी लखनऊ, पाण्डा जी उड़ीसा, रेखा व्यास डाईरेक्टर दूरदर्शन, आचार्य बलवीर जी, पूर्व राजनयिक विद्यासागर वर्मा, डॉ. रूपकिशोर जी आदि ने अपने विचारों से श्रोताओं का मार्गदर्शन किया।

विश्व वेद सम्मेलन के अन्तिम दिवस मनुस्मृति पर शास्त्रार्थ का भी आयोजन किया गया। सभी गणमान्य महानुभावों, संन्यासियों, विद्वानों तथा अतिथियों का स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी चिदानन्द जी, डॉ. आनन्द कुमार जी, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी आदि ने शॉल तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर अभिनन्दन किया।

विश्व वेद सम्मेलन के अवसर पर समय–समय पर गुरुकुल करतारपुर, कन्या गुरुकुल हाथरस, पाणिनी कन्या महाविद्यालय बनारस, गुरुकुल गौतमनगर, गुरुकुल टटेसर, कन्या गुरुकुल नरेला, गुरुकुल पूठ, परमार्थ निकेतन से पधारे ब्रह्मचारी, कन्या महाविद्यालय टाण्डा के बच्चों, ब्रह्मचारिणियों तथा ब्रह्मचारियों ने अत्यन्त प्रभावोत्पादक प्रस्तुति देकर श्रोताओं का दिल जीत लिया। प्रतिदिन प्रातःकाल डॉ. नंदिता शास्त्री के ब्रह्मत्व में होने वाले विशेष यज्ञ में गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों तथा कन्याओं के सस्वर वेद पाठ ने श्रद्धालुओं को अत्यन्त प्रभावित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर इन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों ने गुरुकुलीय शिक्षा का दिग्दर्शन कराया। सम्मेलन में समय–समय पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ व अशोक आर्य आदि ने भजनों की सुन्दर प्रस्तुति से वातावरण को वेदमय बना दिया।

समापन अवसर पर विश्व प्रसिद्ध समाजसेवी तथा इस महत्त्वपूर्ण विश्व वेद सम्मेलन के अध्यक्ष पूज्य स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि वेदों की रक्षा, पठन–पाठन, स्वरूप परम्परा आदि पर शीघ्र और गम्भीरता से सोचने की आवश्यकता है। वेद पर किसी एक वर्ग का एकाधिकार नहीं है। वेद सबकी साझा पूँजी है और सबको मित्रवत देखने की शिक्षा देता है। उन्होंने कहा कि वेदों का जीवन दर्शन ही विश्व की समस्याओं से मुक्ति दिला सकता है। अतः हमें विश्व स्तर पर वेदों की शिक्षाओं का बड़े पैमाने पर प्रचार–प्रसार करना होगा। जिस दिन वेद का अध्यात्म संसार में फैलेगा तभी से लोगों के हृदयों से वैर, वैमनस्य दूर होकर तथा आतंकवाद, अपराध समाप्त होकर विश्व एक कुटुम्ब बन जायेगा और इसी उद्देश्य को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और इसका प्रचार–प्रसार विश्व को शांति, सद्‌भाव, प्रेम, अहिंसा में प्रवृत्त कर सकता है।

सम्मेलन के संयोजक डॉ. आनन्द कुमार जी ने सम्मेलन में पधारे सभी गणमान्य महानुभावों का आभार व्यक्त किया कि उन्होंने सम्मेलन में पधारकर इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाया। उन्होंने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. आनन्द कुमार जी ने श्री विद्या प्रकाश मिश्र जी का विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके ही विशेष प्रयासों से इस विश्व वेद सम्मेलन को सम्पन्न करने के लिए इतना विशाल प्रांगण प्राप्त हुआ मैं उनका हृदय से धन्यवाद करता हूँ। इसी के साथ–साथ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय का भी विशेष धन्यवाद किया गया।

इस ऐतिहासिक सम्मेलन को सफलता के शिखर तक पहुँचाने में जिन समर्पित एवं निष्ठावान कार्यकर्ताओं ने दिन–रात मेहनत करके योगदान दिया उनके नाम निम्न प्रकार हैं – सम्मेलन के मुख्य संयोजक डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई. पी.एस., संयोजक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, सह–संयोजक डॉ. सुधीर कुमार, डॉ देवेश प्रकाश, श्री राकेश चन्द्र नैथानी, आचार्य योगेन्द्र उपाध्याय, श्री जीवन प्रकाश शास्त्री, श्री शैलेश प्रकाश, प्रिं. श्यामलाल आर्य, श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी, श्री चतर सिंह नागर, श्री जियाउद्दीन जावेद, श्री अशोक वशिष्ठ, श्री घनश्याम मुरारी, श्री दलसिंगार (सोनू), श्री मनीश कुमार, श्रीमती श्वेता, श्री संतोष कुमार, कुमारी सोनिया आर्या, श्री सोमेन्द्र शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सम्मेलन के दौरान, श्री धर्मेन्द्र आर्य, आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य, श्री अरूण आर्य, श्री सौरभ आर्य एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने भी अथक परिश्रम किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।